## प्रकरण खोज का–राग श्री मारू

**पिया मैं बोहोत भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और।**
**पूछत फिरों सोहागनी, कोई बताओ पिया ठौर।। १ ।।**

श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी महाराज कहते हैं कि पिया! मैंने संसार का कुल काम-धन्धा छोड़कर आप को ढूंढा और अपनी सखियों (हरदासजी महाराज) से पूछा कि कोई तो पिया और घर का रास्ता बताओ।

**मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।**
**कोई ना कहे मैं देखिया, जिनों नीके कर खोजेल।। २ ।।**

इसका भी थोड़ा-सा मैं अपने द्वारा स्वयं और घर की खोज का ब्यौरा बताती हूं। जिन्होंने अच्छी तरह स्वयं की खोज की, उनमें से किसी ने नहीं कहा कि मैंने देखा है या घर की सुध है।

**सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबों की मत।**
**पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित।। ३ ।।**

शास्त्रों में तथा साधुओं के ग्रन्थों में सबके ज्ञान को मैंने देखा, परन्तु यह पाया कि किसी को भी आपकी खबर नहीं है और न ही कोई आपका ठिकाना बताते हैं।

**छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।**
**संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।। ४ ।।**

संसार में छोटे-बड़े जिन्होंने भी खोज की है, हे धनी! आपको किसी ने नहीं पाया। सभी संशय में डूबे रहे और किसी का भ्रम नहीं मिटा।

**झूठा ए छल कठन, काहूं ना किसी की गम।**
**कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।। ५ ।।**

यह ऐसा विकट छल का ब्रह्माण्ड है कि कहीं भी किसी की सुध नहीं है। हमारा घर कहां है? हमारा मालिक कहां है? यह ठिकाना कौन सा है? और मैं कौन हूं, कोई नहीं बता सका।

**ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।**
**इनमें सीधा दौड़के, कोई ना निकस्या जीत।। ६ ।।**

मैंने इस कपट के ब्रह्माण्ड को देखा जिसमें सोचने की शक्ति ही उलटी है। ब्रह्माण्ड से सीधा (सच्चाई वाला) दौड़कर कोई बाहर नहीं निकल सका (यहां झूठे लोगों की जीत होती है)।

**मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए।**
**इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए।। ७ ।।**

मैंने दिल में खूब विचारा और सोचा। इस संसार में कोई भी अपनी आत्मा को जगाकर भव से पार नहीं गया।

**मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार।**
**तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक कई हार।। ८ ।।**

रात-दिन मेहनत करके (तपस्या, योग-साधना) खोज तो की, पर माया का छल-मोह छूटा नहीं और हाथ पटक कर रह गए।

Nijanand App

**मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।**
**तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं ना देख्या दृष्ट।। ९ ।।**

मोह-तत्व से लेकर आज तक जितनी भी सृष्टि बनी, सबने यही कहा कि मैंने परमात्मा को नहीं देखा।

**वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।**
**एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम।। १० ।।**

दुनियां की जितनी जातियां और धर्म हैं, उनमें मैंने बहुत खोजा, पर किसी ने नहीं बताया कि मैं कौन हूं, कहां हूं और मालिक कहां है?

**आद मध और अबलों, सब बोले या विध।**
**केवल विदेही हो गए, तिन भी ना कही सुध।। ११ ।।**

शुरू में, बीच में और आज तक सबने यही कहा कि केवल राजा जनक ही एक 'विदेही' हुए हैं, पर उन्होंने भी परब्रह्म की पहचान नहीं कही।

**नोट** : सात भूमिका वशिष्ठ जी ने कही हैं (१) शुभेच्छा : वैराग्यपूर्ण मोक्ष की कामना, (२) विचारणा : शास्त्रों का अध्ययन, विवेकपूर्ण वैराग्य और सदाचार, (३) तनुमानसा : शुभेच्छा और विचारणा द्वारा अनासक्ति, (४) सत्वापत्ति : उपायों से परब्रह्म में तद्रूप स्थिति, (५) असंसक्ति : अन्दर और बाहर संस्कारों से दूर रहे और अन्तः समाधिस्थ, (६) पदार्थ भावना : अन्दर और बाहर परब्रह्म का ही अनुभव हो, संसार का नहीं, (७) तुर्यगा : सांसारिक सत्ता से अभाव और आत्म भाव से स्वाभाविक निष्ठा।

**वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।**
**बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।। १२ ।।**

वेदों ने भी कहते-कहते स्पष्ट लिखा कि चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड झूठा है। अन्त में यही कहा कि एक परब्रह्म सत्य है और अनेक देवी-देवता असत्य हैं।

**बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहांलों पोहोंचे मन।**
**ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन।। १३ ।।**

बुद्धि से, चितवन से, नजर से, कान से तथा जहां तक मन पहुंचता है और वाणी पहुंचती है, यह सारा संसार नष्ट हो जाएगा।

**वेदांती भी कहे थके, द्वैत खोजी पर पर।**
**अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।। १४ ।।**

वेदान्ती भी कह-कहकर थक गए कि हमने माया को खूब खोजा और हारकर उन्होंने कहा हमारा सिर कट जाए पर हम अद्वैत के बारे में कुछ नहीं जानते।

**मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।**
**खट प्रमान थें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।। १५ ।।**

मन, चित्त, बुद्धि, कान, नजर और शब्द उस परब्रह्म को नहीं पहुंचते। जो षट् प्रमाण से रहित है, उसके लिए निश्चित रूप से कैसे बताएं?

Nijanand App

**द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार।**
**छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार।। १६ ।।**

परब्रह्म के आड़े माया का परदा लगा है। सब जगह माया ही माया है। उस माया को छोड़कर आगे की सुध किसी ने निश्चित रूप से नहीं दी।

**ए अलख किनहूं न लखी, आदै थें अकल।**
**ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।। १७ ।।**

जिसको आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना यह माया ऐसी (कमबख्त, चाण्डालिनी) है। न तो इसका रूप है और न आंखों से दिखती है। सारे संसार में शुरू से ही व्याप्त है।

**चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए।**
**जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए।। १८ ।।**

माया ही पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। यह निराकार होंते हुए भी आकार धारण करती है। चेतन के सहयोग से जड़ को चेतन करती है तथा चेतन निकलने पर उसे (शरीर को) जड़ बना देती है। इस तरह से उसका चक्कर चलता रहता है।

**ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।**
**छोड़ याको कोई न कहे, ठौर खसम का जेह।। १९ ।।**

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में इसी माया का विस्तार है। इसका ज्ञान सबके पास है। पर परब्रह्म का पता बताने वाला कोई नहीं है।

**जो कछू कहिए वचने, सो तो सब अनित।**
**वतन सरूप कोई न कहे, तो क्यों कर जाइए तित।। २० ।।**

वचनों से जो कुछ भी कहते हैं वह सारे वचन इसी माया के हैं। इसमें अखण्ड स्वरूप की और अखण्ड घर की पहचान बताने वाला कोई नहीं है, तो वहां कैसे जाया जाए?

**पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए।**
**गम छायाकी भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।। २१ ।।**

इस माया रूपी काले पेड़ को किसी ने नहीं देखा। सब इसी की छाया में उलझे पड़े हैं। दुनियां वालों को इस छाया की भी पहचान नहीं हुई, तो इस माया रूपी ब्रह्माण्ड के पार कैसे देख सकते हैं?

**ए जाए ना उलंघी देखीती, न कछू होए पेहेचान।**
**तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक न सुन्यो निसान।। २२ ।।**

इसको देखते हुए भी इससे कोई उलंघ नहीं सकता। इसके अन्दर रहकर भी इसकी कोई पहचान नहीं होती। फिर उस परब्रह्म प्रीतम को कैसे पाया जाए जिसका नामोनिशान भी नहीं सुना।

**खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत।**
**किने न कह्या ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत।। २३ ।।**

हमारे धनी परब्रह्म माया से अलग हैं। सभी जगह पर माया का ही विस्तार है। उस अखण्ड घर की कोई नहीं कहता कि उसे किस तरीके से पाया जाय?

Nijanand App

**ए मत वेद वेदान्त की, सास्त्र सबों ए ग्यान।**
**सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान।। २४ ।।**

वेद और वेदान्त के जानने वाले छः शास्त्रों का ज्ञान ऐसा ही है जिसे लेकर साधु लोग दौड़ते तो हैं, पर निराकार के आगे नहीं जा पाते।

**या विध ग्यान जो चरचही, सो मैं देख्या चित ल्याए।**
**ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए।। २५ ।।**

श्यामाजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से देखा कि यहां का ज्ञान सुनाने वाले माया के अन्दर का ही ज्ञान देते हैं। जैसे मन सपने में भटकता है वैसे ही यह ज्ञानी लोग बेसुधी मे गोते खाते हैं।

**खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिन में बंझा पूत।**
**मद माते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप।। २६ ।।**

यह ज्ञानी क्षण-क्षण में अपने विचार बदलते हैं। कभी कहते हैं कि ब्रह्म घट-घट व्यापी है। कभी कहते हैं कि बांझ के पूत की तरह है। जैसे शराबी बन्दर अनेक रूप लेकर गुलाटियां भरता है उसी तरह यह ज्ञानी लोग करते हैं।

**खिन में कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए।**
**यों संग संसा दृढ़ हुआ, सब धोखे रहे फिराए।। २७ ।।**

एक क्षण में इसे सत बतलाते हैं और दूसरे क्षण कहते हैं कि यह झूठ है। माया कुछ नहीं है। ऐसे लोगों की संगत से संशय और बढ़ गया। इस तरह से सब धोखे में घूम रहे हैं।

**खिन में कहे है आप में, खिन में कहे बाहेर।**
**खिन में मांहें न बाहेर, याको सब्द न कोई निरधार।। २८ ।।**

एक क्षण में कहते हैं कि परमात्मा मेरे अन्दर है। उसी क्षण कहते हैं कि वह सबके अन्दर है। फिर दूसरे क्षण कहते हैं कि वह न अन्दर है और न बाहर है। इस तरह से उनकी कोई बात स्थिर नहीं है।

**खिन में कछू और कहे, खिन में और की और।**
**सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर।। २९ ।।**

एक पल में कुछ कहते हैं, दूसरे में कुछ और का और कहते हैं, इसलिए जिनकी वाणी ही स्थिर नहीं है, तो उनसे परब्रह्म की पहचान कैसे हो सकती है?

**जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए।**
**ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ ना सब्दा कोए।। ३० ।।**

जैसे एक बावरा बालक रोते-रोते लालच में आकर हंसने लगता है, वैसे ही ज्ञानी, साधु, शास्त्रों में दृढ़ता से वचन नहीं बोलते।

**ए सब सींग ससिक, बंझा पूत वैराट।**
**फूल गगन नाम धर के, उड़ाए देवें सब ठाट।। ३१ ।।**

यह सभी खरगोश (ससला) की सींग, बांझ के पुत्र तथा आकाश के फूल के नाम रखकर झूठे शब्दों से कहकर सत का रूप ही बिगाड़ देते हैं।

Nijanand App

**आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान।**
**देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान।। ३२ ।।**

वह अपने ज्ञान के अहंकार में अपने आप को झूठी उपाधियां देकर आकाश के फूल की तरह वर्णन करते हैं। यह अपने आप को मिटा रहे हैं। हाय-हाय ऐसी चतुर माया ने देखते-देखते सबको ठग लिया है।

**कोई ना परखे छल को, जिन छल में है आप।**
**तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात।। ३३ ।।**

जिस माया के छल में बैठे हैं, उस माया के छल को ही कोई नहीं पहचान पाता, तो वह परब्रह्म जो माया से अलग है, उसे किस तरह से प्राप्त कर सकते हैं?

**अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर।**
**ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।। ३४ ।।**

सारे ज्ञानी लोग यहां अटक गए हैं। आगे जाने के रास्ते का उनके पास शब्द ही नहीं है। वह सब इसी माया में खोज कर रहे हैं। माया का अन्धकार बेहद की सीमा से पहले तक फैला हुआ है।

**सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा न निकस्या पार।**
**खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार।। ३५ ।।**

यहां की सब वाणी मोह तत्व तक का ही बयान करती है और एक शब्द भी आगे नहीं जाता। फिर उस परब्रह्म को इसी में खोजते-खोजते अन्धकार में डूब जाते हैं।

**ए ख्वाबी दम सब नींद लों, ए दम नींदै के आधार।**
**जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।। ३६ ।।**

यहां के सभी जीव स्वप्न के ही हैं। सपने तक ही इनकी पहुंच है। यदि कोई आगे जाने की कोशिश करता भी है तो वह निराकार में ही गल जाता है।

**तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान।**
**नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों करे पेहेचान।। ३७ ।।**

यह चौदह लोकों की दुनियां स्वप्न की है। इसकी मूल नींद है। इस नींद के पार जो प्रीतम है उसकी नींद में रहकर कैसे पहचान कर सकते हैं?

**बड़ी बुध वाले जो कहावहीं, सो सीतल भए इन भांत:**
**ना पेहेचान छल वतन की, सो सुन्य गले ले स्वांत।। ३८ ।।**

इस ब्रह्माण्ड में जो बड़े ज्ञानी हुए वह इसी तरह हताश (निराश) हो गए। उन्हें न माया की खबर पड़ी और न आगे की। इस तरह से निराश होकर शून्य में गल गए।

**ए पुकार साधू सुनके, हट रहे पीछे पाए।**
**पार सुध किन न परी, सब इतहीं रहे उरझाए।। ३९ ।।**

इनकी ऐसी अनिश्चित वाणी को सुनकर दूसरे खोज करने वाले भी पीछे हट गए। किसी को भी निराकार के आगे की खबर नहीं मिली। सब इसी निराकार शून्य में उलझे रह गए।

Nijanand App

**जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक।**
**मैं देखे सब्द सबन के, जो गए जाहेर मुख बक।। ४० ।।**

जिसने अपनी बुद्धि के अनुसार जितना खोजा वह उतना ही बोले। मैंने सब की वाणी को देखा और अनुभव किया कि इन्होंने जो कुछ भी कहा है, व्यर्थ है।

**या बिध तो हुई नास्त, सो नास्त जानो जिन।**
**सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन।। ४१ ।।**

इस तरह से सभी की वाणी ने कहा कि वह पाने योग्य नहीं है। अब श्यामाजी कहती हैं कि लोग यहां नहीं पा सके, तो यह नहीं समझना कि ब्रह्म नहीं है। इनकी वाणी में से सार शब्द को खोजकर परब्रह्म हैं, ऐसा मन में दृढ़ किया।

**जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान।**
**सो ए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासो तान।। ४२ ।।**

ऐ दुनियावालो! ऐसा न समझना कि कोई परब्रह्म को पाने वाला नहीं है। परब्रह्म के पाने वाले तो हैं, परन्तु वह इस छल में छिपे हैं। उनका किसी से तालमेल मिलता नहीं है (विचारधारा नहीं मिलती)।

**सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।**
**ओ खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।। ४३ ।।**

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी (आशिक) संसार में छिपे हैं। उनको संसार नाचीज हो गया है। वह केवल प्रीतम के प्रेम में रंगे हैं और दुनियां का सब कुछ भूल गए हैं।

**सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।**
**प्रेमै में मगन भए, और होए गयो सब नास।। ४४ ।।**

इनकी सुरत (ध्यान) माया में नहीं है। इनका ध्यान अखण्ड घर की तरफ उजाले में है। यह पिया के प्रेम में मस्त हैं। इनके लिए दुनियां मर गई है।

**प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।**
**सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।। ४५ ।।**

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी निश्चित रूप से छिपे हैं। वह दुनियां की कोई बात करते ही नहीं हैं। यदि वह पार के शब्द कहते भी हैं तो यहां के ज्ञानियों की समझ में नहीं आता।

**सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।**
**या विध कोई न समझहीं, बात पड़ी है वल।। ४६ ।।**

उनके शब्द सीधे परब्रह्म की बात बतलाते हैं। शास्त्र तो चतुराई और छल से भरे पड़े हैं। इस तरह से उनकी बात के रहस्य (मर्म) को कोई समझ नहीं पाता।

**साधू सास्त्र जो बोलहीं, सो तो सुनता है संसार।**
**पर मूल माएने गुझ हैं, सोई गुझ सब्द हैं पार।। ४७ ।।**

संसार के साधु और शास्त्र जो बोलते हैं सारा संसार उनकी सुनता है, परन्तु परब्रह्म के रहस्य का जो भेद छिपा है उसे किसी ने नहीं पाया। वही पार के शब्द हैं।

Nijanand App

**सब कोई देखे सास्त्र को, सास्त्र तो गोरख धंध।**
**मूल कड़ी पाए बिना, तोलो देखीता ही अंध।।४८।।**

मैंने सारे शास्त्रों को देखा कि यह तो गोरख धन्धा है। जब तक इसकी मूल कड़ी नहीं मिल जाती, तब तक देखते हुए भी अन्धे की तरह भटकना पड़ता है।

**ऐसा तो कोई न मिल्या, जो दोनों पार प्रकास।**
**मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास।।४९।।**

मुझे तो ऐसा कोई नहीं मिला जो हद और बेहद दोनों के ज्ञान में प्रवीण हो, प्रीतम के प्रेम में भी मग्न हो और शास्त्रों के ज्ञान में भी सतर्क हो।

**जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध।**
**सब्दें सब समझावहीं, कहे वतन की विध।।५०।।**

यदि कोई ऐसा मिले तो वही पहचान करा सकता है। वही (गुझ) मायने (अर्थ) खोलकर घर की हकीकत कह सकता है।

**कड़ी बतावे मूल की, सास्त्र निकाले वल।**
**ठौर खसम सब केहेवहीं, जो है सदा नेहेचल।।५१।।**

ऐसा कोई नहीं मिला जो निराकार शून्य की मूल आंकड़ी (गुत्थी) बतावे और शास्त्रों के टेढ़े ज्ञान को सीधा करके सच्चिदानन्द परब्रह्म जो खसम (धनी) है उसकी और परमधाम की पहचान कराए।

**आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख।**
**आतम को परआतमा, नजरों आवे साख्यात।।५२।।**

ऐसा कोई मिले जो अपने अन्दर ही परब्रह्म की पहचान कराए और खुद साक्षी देवे कि मैंने परब्रह्म को देखा है तथा आत्म और परात्म को मिलाकर एक रूप दिखा दे।

**और सब्द भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर।**
**सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर।।५३।।**

और भी संसार के ग्रन्थ हैं जो यह कहते हैं कि परब्रह्म आकर सब संशय मिटाएंगे। जब सारे जगत के लोग हिन्दू या मुसलमान सब उसे पहचान कर चरणों में आएंगे तब हम उठकर परमधाम में धनी के सामने खड़े होंगे।

**आगम की बानी कहे, पिया आवेंगे तेहेकीक।**
**तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत।।५४।।**

इस संसार के सभी ग्रन्थ भविष्यवाणी बोल रहे हैं कि परब्रह्म सबके पिया अवश्य आएंगे। उन वचनों से मुझे पक्का विश्वास हो गया और आशा लग गई कि धनी अवश्य आएंगे।

**मन चित बुध दृढ़ किया, पिया न करें निरास।**
**महामत नेहेचें कहें, होसी दुलहे सों विलास।।५५।।**

अब मेरे मन, चित्त और बुद्धि में दृढ़ हो गया कि वह पिया मुझे निराश नहीं करेंगे। श्री महामति जी कहते हैं कि धनी हमें निश्चित मिलेंगे और हम उनके साथ आनन्द करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ९२ ॥

Nijanand App